जनवरी 2025 वर्ष 4, अंक 1

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई.–मासिक समाचार

“गहन कृतज्ञता और श्रद्धा के साथ, डी.ई.आई. एकीकृत समाचार पत्र का यह मासिक अंक संस्थान के संस्थापक परम पूज्य डॉ. एम.बी. लाल साहब को अत्यंत विनम्रतापूर्वक समर्पित है। हम अपने सभी प्रयासों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए उनकी निरंतर कृपा और आशीर्वाद की कामना करते हैं।”

खण्ड

खंड क : डी.ई.आई.....3

खंड ख : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा.....7

खंड ग : डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI).....10

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. शिक्षा दिवस के अवसर पर डी एस सी 2025 का आयोजन 3
2. संस्थान में लोहड़ी उत्सव का आयोजन 4
संकाय समाचार 4
3. शिक्षा संकाय 4
पंचदिवसीय स्काउटिंग और गाइडिंग शिविर का आयोजन 4
शिक्षकोपलब्धि: 5
अभियांत्रिकी संकाय 5
4. फुटवियर क्षेत्र में विकास के अवसरों पर आमंत्रित वार्ता आयोजित 5
शिक्षकोपलब्धि 6
विज्ञान संकाय 6
5. शिक्षकोपलब्धि 6

खंड ख: डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

6. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 7
7. केन्द्रों से समाचार 8
शिक्षा दिवस समारोह 8
लुधियाना सूचना केंद्र 8
चेन्नई सूचना केंद्र 8
अटलांटा शाखा 9
बैंगलोर केंद्र 9

खंड ग: डी.ई.आई. के भूतपूर्व छात्र (AA DEIs & AAFDEI)

8. संपादक की डेस्क से 10
9. मानसिक स्वास्थ्य और खुशहाली को बढ़ावा देने में मनोविज्ञान की भूमिका 10
प्रीत कुमारी
10. दिमाग (mind) को आकार (shape) देना, चरित्र निर्माण करना: दयालबाग शैक्षणिक संस्थान का सर्वांगीण दृष्टिकोण है 11
अनुभूति ठाकुर
11. अनुशासन का महत्व: मेरे अल्मा मेटर से सीखें 12
तोरण तलवार
प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड 12

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

शिक्षा दिवस के अवसर पर डी एस सी 2025 का आयोजन

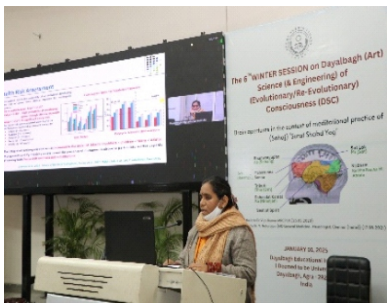

दयालबाग साइंस ऑफ कॉन्शसनेस (डी एस सी) 2025 का छठा शीतकालीन सत्र 1 जनवरी 2025 को दयालबाग एग्रोइकोलॉजी–कम–प्रिसिज़न फार्मिंग फील्ड्स और डीईआई इंटरनेशनल सेमिनार हॉल कॉम्प्लेक्स में 'शिक्षा दिवस' मनाने के लिए आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में विज़न वार्ता (vision talk), मुख्य भाषण, आमंत्रित वार्ता, मौखिक प्रस्तुतियाँ, पैनल चर्चा और एक पोस्टर सत्र शामिल थे।

सम्मेलन का मुख्य आकर्षण शिक्षा सलाहकार समिति (दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के लिए प्रबुद्ध मंडल के रूप में कार्यरत एक गैर–वैधानिक निकाय) के अध्यक्ष, श्रद्धेय प्रो. पी.एस. सत्संगी साहब द्वारा दी गई एक अमृत रूपी विज़न वार्ता थी। वार्ता में भंवर गुफा (टनलिंग इफेक्ट) के रहस्यमय महत्त्व पर जोर दिया गया, जो टी ई ए एस ई (चेतना और कर्तव्यनिष्ठा की विकासवादी/पुनः–विकासवादी कला, विज्ञान और इंजीनियरिंग की ओर) में बाधाओं को पार करने और समझ को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

आई आई टी, मंडी के निदेशक प्रो. लक्ष्मीधर बेहरा ने'साइंस ऑफ कॉन्शसनेसः द प्रोग्रेसिव स्टेप्स' विषय पर मुख्य व्याख्यान दिया और दिल्ली विकास प्राधिकरण की निदेशक (योजना) सुश्री काकोली मैती ने शहरी नियोजन में चेतना पर अपना मुख्य व्याख्यान दिया। आमंत्रित वार्ता शृंखला में प्रोफेसर अनीता लखानी, रसायन विज्ञान विभाग, विज्ञान संकाय, डीईआई ने 'एयर एंड वाटर क्वालिटी मॉनिटरिंग एंड असेसमेंट एट दयालबाग' के बारे में बात की, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग, इंजीनियरिंग संकाय के प्रोफेसर डी. भगवान दास डीईआई, आगरा ने 'Academia-Community Synergy: Renewable Energy' विषय पर विचार व्यक्त किए । विज्ञान संकाय के वनस्पति विज्ञान विभाग के डॉ. राजीव रंजन ने 'Agroecological Contribution to Biodiversity and Sustainable Development' के सन्दर्भ में विचार व्यक्त किए।

पैनल चर्चा में, भारत और विदेश के बाईस प्रतिष्ठित पैनलिस्टों ने जीवंत चर्चा में भाग लिया, जो 'डेवलपिंग ए टार्गेटेड रोडमैप विथ एक्शनएबल स्टेप्स टू एन्हांस द क्वालिटी ऑफ ऑनगोइंग रिसर्च ऑन TEASE (*Towards Evolutionary/Re-Evolutionary Art, Science, and Engineering of) Consciousness & Conscientiousness through collaborative engagement between the Community* (दयालबाग हेडक्वार्टर्स एंड ऑल इट्स ब्रांचेज़) एंड एकेडेमिया (डी.ई.आई. Main Campus and its Supervised Open Book Examination/Entrance ODL Centres): भंवर गुफा/टनलिंग इफेक्ट' विषय पर केंद्रित थी।

सम्मलेन के विषय ने दयालबाग समुदाय और दयालबाग शिक्षा जगत के बीच सहक्रियात्मक संबंधों की परिवर्तनकारी क्षमता पर जोर दिया। विशेषज्ञों द्वारा इस पर विवेकपूर्ण ढंग से प्रकाश डाला गया कि वैश्विक कल्याण को बढ़ावा देने की व्यापक दृष्टि से निर्देशित दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीईआई) और पूरे दयालबाग समुदाय ने वैज्ञानिक अन्वेषण को एकीकृत करने वाले तरीकों से शिक्षा, अनुसंधान और सामुदायिक जुड़ाव को फिर से परिभाषित करने के लिए एक अग्रणी यात्रा शुरू की है। आध्यात्मिक चेतना के साथ पैनल ने एक मत से इस बात पर जोर दिया कि इस परिवर्तनकारी पहल के केंद्र में वक्त संत सतगुरु, परम पूज्य, प्रोफेसर पी.एस. सतसंगी साहब, अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति (ए सी ई), दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, की सर्वोत्कृष्ट भूमिका है। जीवों के उत्थान के लिए और दयालबाग समुदाय के विकास को सदैव प्रगतिशील स्वर्णिम पथ पर ले जाने के लिए अपने सर्वव्यापी मार्गदर्शन और असीम करुणा से सभी को आशीर्वाद देने के लिए दयालु रूप से चुना गया है। माध्य पथ पैनलिस्टों द्वारा

विभिन्न व्यावहारिक कदमों की भी सराहना की गई जिसमें TEASE पर सहयोगात्मक अनुसंधान और अध्ययन को बढ़ावा देना, चेतना अनुसंधान में सिस्टम तकनीकों का अनुप्रयोग, ज्ञान के भंडार का व्यापक प्रसार, भूमि–से–प्रयोगशाला और प्रयोगशाला–से–भूमि अनुसंधान आदि शामिल हैं।

सांस्कृतिक समारोह, जो कार्यक्रम का हिस्सा था, में दयालबाग के सुपरमैन इवॉल्यूशनरी स्कीम के बच्चों द्वारा एक नृत्य प्रदर्शन, मध्य क्षेत्र युवा महोत्सव के छात्र विजेताओं द्वारा एक पश्चिमी समूह गीत और संगीत विभाग, कला संकाय, डीईआई, आगरा के शिक्षकों द्वारा एक विशेष ''जसरंगी वाद्यवृंद'' प्रदर्शन किया गया इस कुशलतापूर्वक प्रस्तुति की सभी ने खूब सराहना की। कार्यक्रम का समापन संस्थान गीत के बाद धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

संस्थान में लोहड़ी उत्सव का आयोजन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय), दयालबाग, आगरा 282005 का परिसर खुशी और उत्सव के उत्साह से भरा हुआ था क्योंकि छात्र 13 जनवरी 2025 को लोहड़ी फसल का त्यौहार जो उत्तरी भारत में अत्यधिक सांस्कृतिक महत्त्व रखता है मनाने के लिए एक साथ एकत्रित थे । यह उत्सव परंपरा और सामुदायिक भावना का सम्मान करने के लिए छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों को एक दूसरे से जोड़ता है। कार्यक्रम की शुरुआत शाम को परिसर के तीन छात्रावासों में एक आभासी अलाव जलाकर की गई, जो सूर्य की ऊर्जा और सर्दियों के अंत का प्रतीक है।

इस उत्सव में लोक गीतों के साथ भांगड़ा और गिद्दा नृत्यों की मधुर प्रस्तुतियों सहित कई सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ हुईं। प्रदर्शन को दर्शकों से भरपूर प्रशंसा मिली, दर्शकों में संकाय सदस्य, विभिन्न विभागों के छात्र और स्थानीय समुदाय के सदस्य शामिल थे।

उत्सव के हिस्से के रूप में, पारंपरिक व्यंजन, जैसे पॉपकॉर्न, मूंगफली, रेवड़ी, और गुड़ की मिठाइयाँ उपस्थित लोगों के बीच वितरित की गईं, जिससे उत्सव में एक आनंददायक नमकीन–मीठा स्वाद और स्पर्श जुड़ गया। छात्रों और शिक्षकों ने हाथ मिलाकर ईश्वर से प्रार्थना की, प्रकृति के उपहारों के प्रति आभार व्यक्त किया और समृद्धि और सफलता के लिए आशीर्वाद मांगा। इस सुंदर संध्या ने सभी को पुरानी यादों और अपनेपन की भावना के साथ छोड़ दिया, जिससे सद्भाव और सामुदायिक भावना को बढ़ावा देने के साथ–साथ सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए संस्थान की प्रतिबद्धता को मजबूत किया गया। दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट समग्र शिक्षा के प्रतीक के रूप में खड़ा है, जो न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता बल्कि अपने छात्रों के सांस्कृतिक और नैतिक विकास का भी पोषण करता है।

संकाय समाचार

शिक्षा संकाय

पंचदिवसीय स्काउटिंग और गाइडिंग शिविर का आयोजन

शिक्षा संकाय ने 31 दिसंबर 2024 से 4 जनवरी 2025 तक एक जीवंत पंचदिवसीय स्काउटिंग और गाइडिंग शिविर का आयोजन किया। शिक्षा संकाय के डीन प्रो. एन.पी.एस चंदेल ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और पूरे शिविर में लागू किए जाने वाले सुरक्षा उपायों की रूपरेखा बताई। शिविर के दौरान, प्रतिभागियों ने व्यावहारिक कौशल, टीम वर्क और बाहरी जीवन के प्रति प्रशंसा विकसित करने के उद्देश्य से विभिन्न प्रकार की व्यावहारिक गतिविधियों में भाग लिया। पहले दिन शिक्षा संकाय के प्रोफेसर एमेरिटस रंजीत सत्संगी द्वारा टेंट पिचिंग पर एक प्रदर्शन और व्याख्यान हुआ। इसके अतिरिक्त, पर्यावरण स्वच्छता और पोस्टर/नारा–निर्माण प्रतियोगिताओं का आयोजन और मूल्यांकन डॉ सुमन शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर और डॉ नमिता त्यागी, सहायक प्रोफेसर, कला संकाय द्वारा किया गया। दूसरे दिन कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह हुआ, जहां मुख्य अतिथि, प्रो आनंद मोहन,कुलसचिव डी.ई.आई और संस्थान की एक प्रतिष्ठित पूर्व छात्रा नमिता जी. सूद ने भावी शिक्षकों को सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने और विकसित परिदृश्य के अनुकूल होने के लिए प्रेरक व्याख्यान दिए। इस दिन एक सांस्कृतिक प्रदर्शन भी हुआ, जिसका मूल्यांकन डॉ नमस्या, एसोसिएट प्रोफेसर और डॉ निशीथ गौड़, सहायक प्रोफेसर, कला संकाय ने किया। तीसरे दिन, श्री अमित छाबड़ा, प्रशिक्षक, रैपिड एक्शन फोर्स (आर ए एफ), दयालबाग और श्री एसडी सिन्हा, प्रमुख सहायक, सीएओ, डी.ई.आई ने प्रतिभागियों को आत्मरक्षा प्रशिक्षण दिया। चौथे दिन रोमांचक पैदल यात्रा के साथ–साथ डी.ई.आई के अनुपम उपवन में स्काउट्स और गाइड्स के टेंट पिचिंग और पाक कौशल का प्रदर्शन हुआ, जिसका मूल्यांकन प्रोफेसर एमेरिटस अर्चना कपूर, एम.एड. और पीएच.डी कार्यक्रमों के डीन और प्रमुख प्रो. एन.पी.एस. चंदेल, डीएलएड कार्यक्रम की प्रमुख प्रो. नंदिता सत्संगी और डी.ई.आई के शिक्षा संकाय, बी.एड. की प्रमुख प्रो. सविता श्रीवास्तव ने किया। शिविर का समापन डी.ई.आई के शिक्षा संकाय की पूर्व डीन प्रो. किरण नाथ द्वारा दिलाई गई स्काउट और गाइड शपथ के साथ हुआ। डी.ई.आई. की कोषाध्यक्ष श्रीमती स्नेह बिजलानी ने सभी छात्रों को आशीर्वाद दिया। उनके संबोधनों ने भविष्य के नेताओं के विकास में आत्म–अनुशासन और सेवा के महत्व को रेखांकित किया। शिविर में डी.एल.एड., बी.एड. और प्री–सर्विस टीचर एजुकेशन (पी एस टी ई) कक्षाओं के 423 छात्रों ने प्रतिभागिता प्रदान की।

शिक्षकोपलब्धि:

- डी.ई.आई. के शिक्षा संकाय की सहायक प्रोफेसर डॉ. शालिनी वर्मा को उनके शैक्षणिक यूट्यूब चैनल 'मेटा एजुकेशन' के लिए 'यूट्यूब क्रिएटर अवार्ड' (सिल्वर अवार्ड) से सम्मानित किया गया, जो शोध पद्धति, शोध योग्यता, सांख्यिकी और बाल शिक्षाशास्त्र से संबंधित सामग्री प्रदान करता है, और जिसने 100,000–ग्राहकों का आंकड़ा पार कर लिया है।
- डॉ. सोना दीक्षित ने 16 से 18 दिसंबर 2024 तक हावर्ड यूनिवर्सिटी वाशिंगटन डीसी, यूएसए के सहयोग से डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में आयोजित 'Navigating Global Intersections: Growth, Sustainability, Cooperation and Innovation in Dynamic World' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में सत्राध्यक्ष के रूप में कार्य किया। उन्होंने 20 दिसंबर 2024 को पहल होराइजन, भारत द्वारा आयोजित विंटर रिसर्च इंटर्नशिप प्रोग्राम (डब्ल्यू आर आई पी) में 'मानवाधिकार जागरूकता; करुणा और सम्मान की दुनिया बनाना' पर एक व्याख्यान भी दिया।

अभियांत्रिकी संकाय

फुटवियर क्षेत्र में विकास के अवसरों पर आमंत्रित वार्ता आयोजित

डी.ई.आई. के अभियांत्रिकी संकाय के फुटवियर प्रौद्योगिकी विभाग ने गतिशील और निरंतर विकसित हो रहे फुटवियर उद्योग पर 14 दिसंबर 2024 को ज्ञानवर्धक आमंत्रित वार्ता आयोजित की। सत्र का नेतृत्व क्रमशः मेट्रो एंड मेट्रो, आगरा के महाप्रबंधक और स्टोर प्रबंधक श्री आर.के. शर्मा और श्री गुरदेव प्रसाद ने किया। उन्होंने उत्साही छात्रों को संबोधित किया, फुटवियर क्षेत्र के भविष्य और इसके आशाजनक विकास के अवसरों पर बहुमूल्य ज्ञान और दृष्टिकोण साझा किए।

कार्यक्रम की शुरुआत विभागाध्यक्ष प्रो. डी.के. चतुर्वेदी के गर्मजोशी भरे स्वागत से हुई, जिन्होंने सम्मानित अतिथियों का परिचय कराया और छात्रों के पेशेवर दृष्टिकोण को आकार देने में उद्योग की भागीदारी के महत्व पर जोर दिया। श्री आर.के. शर्मा ने एक आकर्षक व्याख्यान दिया जिसमें फुटवियर उद्योग के प्रमुख पहलुओं, इसके रुझानों, चुनौतियों और अवसरों को शामिल किया गया। श्री गुरदेव प्रसाद ने चर्चा में बहुमूल्य परिचालन दृष्टिकोण जोड़े। अपने व्यापक अनुभव से, उन्होंने विनिर्माण इकाइयों में कुशल

चमड़ा आउटसोर्सिंग और पहचान बिंदुओं के लिए दिन–प्रतिदिन की चुनौतियों और रणनीतियों में व्यावहारिक अंतर्दृष्टि साझा की।

शिक्षकोपलब्धिः–

डी.ई.आई के अभियांत्रिकी संकाय के फुटवियर प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख प्रो. डी.के.चतुर्वेदी ने मुख्य भाषण दिया और डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय और नीलन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, आगरा के सहयोग से कोशांबी फाउंडेशन, भारत द्वारा 27 से 29 दिसंबर 2024 तक आयोजित स्थिरता विकास और नवाचार के लिए बहुविषयक अनुसंधान और अभ्यास (आई सी एम आर पी 2024) पर दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में प्रख्यात वैज्ञानिक पुरस्कार – 2024 से सम्मानित किया गया।

डॉ. अतुल दयाल, सहायक प्रोफेसर, फुटवियर प्रौद्योगिकी विभाग, डी.ई.आई. ने डॉ. भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय और नीलन ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस, आगरा के सहयोग से कोशांबी फाउंडेशन, भारत द्वारा 27 से 29 दिसंबर तक आयोजित स्थिरता विकास और नवाचार के लिए बहुविषयक अनुसंधान और अभ्यास (आई सी एम आर पी 2024) पर दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार – 2024 प्राप्त किया।

विज्ञान संकाय

शिक्षकोपलब्धिः

- डी.ई.आई. के भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर सुखदेव रॉय ने 23 से 25 अक्टूबर 2024 तक चंडीगढ़ के सीएसआईआर–केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन (सी एस आई ओ) में ऑप्टिक्स और फोटोनिक्स इंस्ट्रूमेंटेशन में प्रगति पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'प्रकाश और ध्वनि के साथ मस्तिष्क और हृदय को नियंत्रित करना' पर एक आमंत्रित व्याख्यान दिया और बायो–फोटोनिक्स और मेडिकल ऑप्टिक्स पर सत्र की अध्यक्षता की।

उन्होंने 29 नवंबर 2024 को नई दिल्ली में डीएसटी समीक्षा बैठक में कम्प्यूटेशनल मॉडलिंग ऑफ ऑप्टोजेनेटिक कंट्रोल ऑफ न्यूरल सर्किट्स विद लाइट" पर डीएसटी प्रायोजित आरएंडडी परियोजना के प्रमुख अन्वेषक के रूप में प्रगति रिपोर्ट भी प्रस्तुत की। उन्होंने जर्नल ऑफ न्यूरल इंजीनियरिंग और ऑप्टिकल इंजीनियरिंग के लिए शोध पत्रों की भी समीक्षा की।

- मृदुल कुमार, के. स्वामी दया और जीशान को प्लांट स्ट्रेस निर्धारित करने के लिए उपकरण और विधि पर पेटेंट प्रदान किया गया, आवेदन संख्याः 202111033265, अनुदान की तिथिः 1 अक्टूबर, 2024।
- रवींद्र भारद्वाज, अतिथि व्याख्याता, भौतिकी और कंप्यूटर विज्ञान विभाग, डी.ई.आई, अन्य विश्वविद्यालयों के लेखकों के साथ, दो पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनके शीर्षक हैं, फंडामेंटल्स ऑफ पायथन प्रोग्रामिंग (ISBNः 9789361320996, 2024), और डेटा साइंस एंड आईओटी (ISBNः 978361321399,. 2024)। ये पुस्तकें साइंटिफिक इंटरनेशनल पब्लिक हाउस, मन्नारगुडी, तमिलनाडु द्वारा प्रकाशित की गईं।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

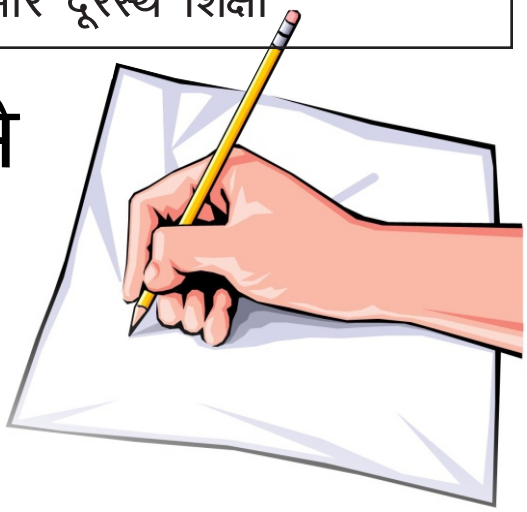

हाल ही में 'वैज्ञानिक टेम्पर' (Scientific Temper) विषय पर प्रकाशित एक लेख [1] में लेखक ने कई रोचक और उपयोगी अवलोकन (observations) पेश किये हैं जिनमें से कुछ नीचे प्रस्तुत हैं:

- तहकीकात (inquiry) की भावना वैज्ञानिक टेम्पर का मुख्य आधार है। वह स्वभाव जिसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला व्यक्ति, चाहे जानबूझकर या अनजाने में, रोजमर्रा के कार्यों और विकल्पों के प्रति अनुभविक दृष्टिकोण जो बनाये जाते हैं उन्हे लागू करता है।
- भारतीय परिवार प्रणाली में बच्चों में इस भावना का संचार होता है कि बचपन से ही जो कहा जाता है उसे स्वीकार करने का महत्व होता है।
- ऐसा प्रतीत होता है कि भारतीय जनसंख्या के अधिकांश भाग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव है।
- अगली पीढ़ी के दिमागों को वैज्ञानिक सोच का महत्व समझाना जरूरी है। यह जरूरी है कि उन्हें उचित शिक्षा मिले। व्यापक रूप से माना जाने वाला विश्वास है कि बच्चे की स्कूली शिक्षा के अंत के करीब, इसे शुरू कर देना चाहिए जबकि बच्चे की शिक्षा के प्रारंभिक वर्ष इस तरह का प्रशिक्षण शुरू करने के लिए उपयुक्त है।
- वैज्ञानिक मनोवृत्ति दर्शाने वाले गुणों को प्राप्त करने के लिए जिज्ञासु भावना और लचीलेपन जैसे सिद्धांतों का पोषण करना आवश्यक है।
- पारंपरिक शिक्षण का अनुत्पादक (unproductive) सीखने का वातावरण वास्तव में अधिकांश बच्चों की जिज्ञासा, जो उनमें स्वाभाविक रूप से निहित होती है, को बाधित करता है।
- यह महत्वपूर्ण है कि शैक्षिक प्रक्रिया आनंददायक हो, जिसमें शिक्षक मार्गदर्शक और ज्ञान के सुगमकर्ता के रूप में सहायता करें।
- युवाओं को अपनी गति से अध्ययन करने की अनुमति दी जानी चाहिए और अपनी रुचि के अनुसार सीखने की। शिक्षक से नकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त करने की चिंता किए बिना गलतियाँ करने की अनुमति भी दी जानी चाहिए।
- शिक्षण में खोजपूर्ण दृष्टिकोण का उपयोग करना एक बहुत ही सफल तरीका है। वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दें, विशेष रूप से विज्ञान कक्षाओं में जहाँ प्रयोग अक्सर समझने की कुंजी है।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51ए (एच) में वैज्ञानिक सोच के उल्लेख में संविधान शीर्षक के अंतर्गत मौलिक कर्तव्यों में 'वैज्ञानिक विकास की आवश्यकता' पर प्रकाश डाला गया है स्वभाव, मानवतावाद और जांच और सुधार की भावना' पर ध्यान केंद्रित विज्ञान के विकास की आवश्यकता और इसके माध्यम से वैज्ञानिक टैम्पर पर ध्यान केंद्रित किया है।
- संयुक्त राष्ट्र का सतत विकास लक्ष्य संख्या 16 (एस डी जी 16) इसका उद्देश्य ''स्थायी विकास के लिए शांतिपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा देना'' है विकास, सभी के लिए न्याय तक पहुंच प्रदान करना और प्रभावी निर्माण करना, सभी स्तरों पर जवाबदेह और समावेशी संस्थान" विकसित करना। लेखक यह दिखाने के लिए तर्क प्रस्तुत करता है कि ''केवल खेती के साथ शिक्षा के माध्यम से वैज्ञानिक सोच विकसित करना हमारे लिए संभव होगा 'शांति, न्याय और मजबूत संस्थाएं '' हासिल करना संभव होगा।
- NEP 2020 (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) के समर्थन में कहा गया है कि वैज्ञानिक अनुभवों को संरक्षित करने के लिए शिक्षकों को उपयुक्त कक्षा अभ्यासों को प्रोत्साहित करने का आग्रह करना चाहिए।

यह हमारे पूज्य आचार्यों की दूरदर्शिता का द्योतक है कि नवाचार और मूल्य हमारी शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग रहे हैं–इनकी स्थापना और वैज्ञानिक सोच को उच्च प्राथमिकता दी गई है। दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (Deemed to be University) की एक अनूठी विशेषता है विश्वविद्यालय में प्री–नर्सरी से लेकर पीएचडी तक की शिक्षा का एकीकरण। संस्थान की शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार

डिज़ाइन किया गया है कि सभी चरणों में शिक्षार्थी को उचित प्रारूप में प्रस्तुत करके मूल्यों का विकास हो सके। उदाहरण के लिए, प्राथमिक विद्यालय स्तर पर, कहानियों के माध्यम से मूल्य प्रदान किए जाते हैं जिसमें तर्कसंगत सोच, रचनात्मकता आदि पर जोर दिया जाता है। उच्च कक्षाओं में गतिविधि–आधारित शिक्षा और खोज दृष्टिकोण शिक्षण उन्हें व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने की अनुमति देता है। विभिन्न प्रयोगशालाएँ जैसे अटल टिंकरिंग लैब, प्रैक्टिकल कार्यशालाएं, ह्यूरिस्टिक केंद्र आदि स्थापित किये गये हैं जो छात्रों के लिए उपलब्ध है ताकि वे वैज्ञानिक घटनाओं (phenomena) के बारे में सीख सकें। विभिन्न अंतर–विद्यालय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। जब छात्र उच्च कक्षाओं में जाता है, तो उसे STEM की शिक्षा दी जाती है जो उसे स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित करें।

स्नातक स्तर पर, छात्र 'वैज्ञानिक पद्धति' का अध्ययन करते हैं। सामान्य ज्ञान एवं समसामयिकी पाठ्यक्रम जिसका उद्देश्य है वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना और समकालीनता के प्रति जागरूकता बढ़ाना, तकनीकी प्रगति की तेजी से बदलती दुनिया में विकास। यहां वैज्ञानिक स्वभाव का अर्थ है पूर्वाग्रह से बचना और धारणा और निर्णय लेने में तर्क। यह क्रिटिकल एग्ज़ामिनिंग के द्वारा विकसित किया जाता है न केवल घटनाओं की बल्कि उनके कारणों की भी आलोचनात्मक जांच करना–जटिल वातावरण में जाँच करना। यह पाठ्यक्रम चार सेमेस्टर में पढ़ाया जाता है जहां संकाय निर्धारित विषय–वस्तु को कवर करता है। वर्तमान विश्व में हो रहे घटनाक्रमों के साथ–साथ वर्तमान मामलों पर भी नजर रखता है।

अंत में, यह उल्लेखनीय है कि डी.ई.आई. के उद्देश्यों और लक्ष्यों में से एक परम पूज्य डॉ. एम.बी. लाल साहब द्वारा तैयार की गई शिक्षा नीति 1975, का एक मुख्य पहलू इस प्रकार है:

''वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना और उसे बढ़ावा देना....''

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

संदर्भः–

[1] S Prabu Shankar, Scientific Temper for Achieving Peace, Justice and Strong Institutions (SDG 16), University News, Vol 62, No. 48, November 25 – December 01, 2024

केन्द्रों से समाचार

शिक्षा दिवस समारोह

लुधियाना सूचना केंद्र

सूचना केंद्र लुधियाना ने 1 जनवरी, 2025 को शिक्षा दिवस मनाया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य DEI की शिक्षा नीति के अनुसार पूर्णता के महत्व पर, जोर देना था। संरेखित कार्यक्रम विश्वविद्यालय प्रार्थना के पाठ के साथ शुरू हुआ, उसके बाद विश्वविद्यालय गीत ने वातावरण को श्रद्धा से भर दिया। वक्ताओं ने शिक्षा दिवस और डी.ई.आई. के महत्व पर प्रकाश डाल शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए एक कार्यक्रम का छात्रों की प्रतिभा और उत्साह को प्रदर्शित करने के लिए आयोजन किया गया। अंत में, प्रार्थना और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। हल्का नाश्ता, जिससे उपस्थित लोगों को बातचीत करने का और भविष्य की योजनाओं पर सहयोग करने का अवसर मिलता है।

चेन्नई सूचना केंद्र

चेन्नई केंद्र में शिक्षा दिवस 1 जनवरी, 2025 को धूमधाम से मनाया गया। वर्तमान छात्रों, DEI के पूर्व छात्रों और संकाय सदस्यों द्वारा संयुक्त रूप से विश्वविद्यालय प्रार्थना का पाठ किया गया। इसके बाद शिक्षा दिवस के महत्व पर एक संक्षिप्त टिप्पणी दी गई। शिक्षा दिवस पर श्लोक ''कर्मण्य वाधिकारस्ते...'' पर एक प्रस्तुति पवित्र भगवद गीता से, और पवित्र पुस्तकों के अंशों का प्रस्तुतीकरण आदरणीय लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकें, जो शिक्षा से संबंधित थीं उनसे किया गया। एक छात्र ने बुराइयों को मिटाने में शिक्षा की भूमिका पर भी अपने विचार साझा किए। समाज में व्याप्त बुराइयों और कुरीतियों पर चर्चा की गई। इसके बाद पूर्व छात्रों ने अपने विचार साझा किए। एक ने DEI में अपने कॉलेज के दिनों की कुछ बातें शेयर की व मूल्य आधारित शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला एवं शिक्षा

और किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व पर उसका प्रभाव के विषय में बताया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिसके बाद यूनिवर्सिटी सॉन्ग की प्रस्तुति दी गई और मिठाई वितरण का आयोजन हुआ।

अटलांटा शाखा

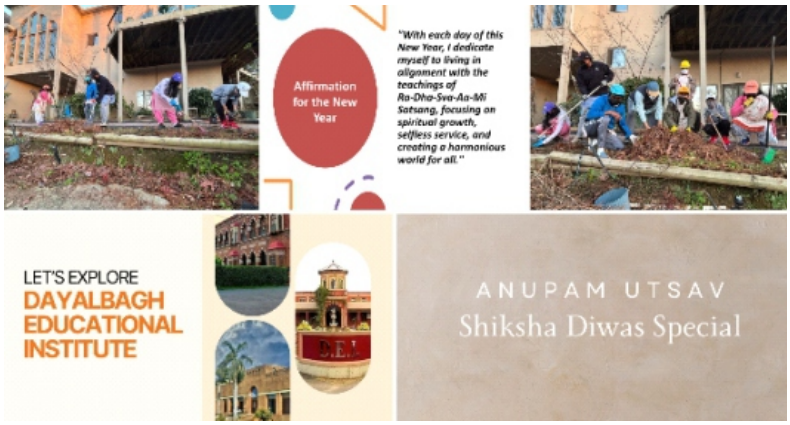

परम गुरु हुजूर मेहताजी महाराज के आदर्शों पर अडिग रहते हुए, अटलांटा ब्रांच में सिखाये हुए आदर्श, ''यदि आप खाना चाहते हैं, तो आपको पहले पसीना बहाना होगा'' से शाखा सदस्यों ने वर्ष 2025 की शुरुआत खेत सेवा के साथ पौधों की क्यारियाँ तैयार करके की। आगामी सत्र के लिए बच्चे, युवा और बुजुर्ग सदस्यों ने इस सेवा में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

बाद में, शिक्षा दिवस मनाते हुए, अटलांटा शाखा ने, डलास, ह्यूस्टन और फ्लोरिडा पर स्थित अपने संबन्धित केंद्रों के साथ दयालबाग़ राधास्वामी सतसंग एसोसिएशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका (DRSANA) के कुछ प्रतिनिधि, अपने प्रमुख कार्यक्रम अनुपम उत्सवः शिक्षा दिवस विशेष के लिए वर्चुअल रूप से एकत्रित हुए। अटलांटा की शाखा सचिव श्रीमती. मधुलिका नेमानी ने सभी का गर्मजोशी से स्वागत किया और संक्षिप्त इतिहास साझा किया जिसमें दयालबाग़ में शिक्षा दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला गया। इसके बाद शाखा सदस्यों ने एक इंटरैक्टिव गतिविधि में भाग लिया जिसमें दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थान का आभासी दौरा डॉ. सुधि ओवेरॉय ने प्रस्तुत किया। इस दौरे में विभिन्न संकायों की पहचान करना और जो विभाग या पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं उन्हें सूचीबद्ध करना शामिल था। इंजीनियरिंग संकाय, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, शिक्षा, वाणिज्य, कला और अन्य संबन्धित स्कूलों को विशेष रुप से प्रदर्शित किया गया। दर्शकों में DEI के पूर्व छात्रों ने अपनी यादों को साझा किया–संस्थान में बिताए समय की कुछ स्मरणीय यादें–जबकि अन्य सदस्यों ने इन स्थलों को अपनी अगली यात्रा में दयालबाग़ में देखने की इच्छा व्यक्त की।

सदस्यों को 2025 और उससे आगे के लिए लक्ष्य निर्धारित करने में मदद करने के लिए, डी आर एस ए एन ए सचिव श्री. दयाल नागासारू ने खेती पर एक ज्ञानवर्धक प्रस्तुति दी–सार्थक लक्ष्य जो व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास को संतुलित करते हैं। रा धा/धः स्व आ मी मत की पवित्र पुस्तकों की शिक्षाओं से प्रेरणा प्राप्त करते हुए, उन्होंने सदस्यों को सामंजस्यपूर्ण रिश्तों को पोषित करने के लिए प्रोत्साहित किया, न केवल एक दूसरे के साथ बल्कि पर्यावरण के साथ भी।

कार्यक्रम का समापन मालिक के पवित्र चरणों में भावपूर्ण प्रार्थना के साथ हुआ। परम दयालु रा धा/धः स्व आ मी दयाल, उनकी असीम कृपा और दया से नए साल में सदस्यों को सद्मार्ग पर ले जाने के लिए भावपूर्ण प्रार्थना के साथ हुआ।

बैंगलोर केंद्र

डीईआई सेंटर बैंगलोर ने ''शिक्षा दिवस 2025'' को हाइब्रिड मोड में मनाया ताकि कई लोग इसमें भाग ले सकें। कार्यक्रम की शुरुआत सेंटर–इन–चार्ज के स्वागत भाषण से हुई और फिर एंकर श्रीमती श्वेता सेठिया ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। यूनिवर्सिटी प्रार्थना के बाद, मिस पारुल शर्मा ने ''शिक्षा दिवस पर संक्षिप्त नोट'' पढ़ा। इसके बाद सेंटर–इन–चार्ज प्रोफेसर टी वी एस एन मूर्ति ने ''डीईआई ओडीई सेंटर के लिए महत्वपूर्ण शैक्षणिक मामले'' पर भाषण दिया। इसके बाद, बैंगलोर सत्संग शाखा के सदस्यों ने प्रार्थनाएं पढ़ीं और श्रीमती रेशम भाटिया ने हिंदी में ''दयालबाग में शिक्षा पर प्रवचन। संपूर्ण शिक्षा का एक दृष्टिकोण'' पढ़ा। श्री आशीष सेठिया ने ''हमारे युवाओं की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शिक्षा को प्रभावित करने वाला सोशल मीडिया'' पर एक स्पष्ट प्रस्तुति दी, जिसे उपस्थित लोगों ने बहुत सराहा।

इसके बाद ''ज्ञान और शिक्षा के बीज 600 ईसा पूर्व–400 ईसा पूर्व'' पर एक दिलचस्प प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का समापन विश्वविद्यालय गीत की प्रस्तुति और प्रसाद वितरण के साथ हुआ।

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

चूंकि कई लोग मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं से जूझ रहे हैं, इसलिए इस बारे में जागरूकता जरूरी है। इससे कैसे निपटा जाए और कहां से मदद ली जाए, यह जानना जरूरी हो जाता है। 20 अक्टूबर, 1936 को डॉ. एस. राधाकृष्णन ने पूर्वी धर्म और नैतिकता के नव निर्वाचित स्पैलडिंग प्रोफेसर के रूप में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में "विश्व की अजन्मी आत्मा" शीर्षक का उद्घाटन व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान हमारे समय के लिए उतना ही प्रासंगिक लगता है जितना कि उनके समय में था। अब हमें ज्वरग्रस्त और अराजक गतिविधि में डूबने से पहले, नैतिकता और आध्यात्मिक अनिश्चित्ता के रसातल का सामना करना होगा। इसका उत्तर शायद इन दोनों के बीच के संबंध में छिपा है आंतरिक और बाह्य स्वयं (selves) में सामंजस्य की भावना, जो धर्म से उत्पन्न होती है। धर्म हठधर्मिता और अनुष्ठानों के रूप में नहीं बल्कि धर्म 'सर्वोच्च धार्मिक विश्वास' के रूप में सचेत आत्म–खोज की कला' में है। इस प्रकाशन में अन्य दो उल्लेख दयालबाग़ शिक्षा प्रणाली में गहराई से अंतर्निहित मूल मूल्यों को उजागर करते हैं शिक्षा की प्रणाली, ज्ञान और कौशल के साथ–साथ यहाँ से अध्ययन करने वाले वे लोग भाग्यशाली हैं जो अपने साथ जीवन कौशल लेकर जाते हैं जो उन्हें एक बढ़ती हुई हिंसक और क्रूर दुनिया में जीवित रहने के लिए साहस, धीरज, आंतरिक शांति, ईश्वरीयता की गहरी अनुभूति प्राप्त करने में मदद करेगा।

कृपया अपनी टिप्पणियाँ और विचार aadeisnewsletter@gmail-com पर साझा करें। आपकी प्रतिक्रिया की बहुत सराहना की जाएगी।

मानसिक स्वास्थ्य और खुशहाली को बढ़ावा देने में मनोविज्ञान की भूमिका

प्रीत कुमारी

बी.ए.(1992), एम.ए.(1994), बी.एड. (1995), पी एच.डी (2002), डी.ई.आई.

वर्तमान में, मनोविज्ञान विभाग, संकाय में एसोसिएट प्रोफेसर, सामाजिक विज्ञान, डी.ई.आई.

मानसिक स्वास्थ्य मानव जीवन का एक मूलभूत पहलू है, जिसमें भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कल्याण है। यह अनुभूति, धारणा और व्यवहार, में व्यक्तियों को तनाव को संभालना, दूसरों से संबंध बनाना और निर्णय लेना आदि में प्रभावित करते हैं। मनोविज्ञान मानसिक स्वास्थ्य को समझने, मानसिक विकारों के निदान में बीमारियों का उपचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तथा चिकित्सीय हस्तक्षेप विकसित करना है।

सिगमंड फ्रायड (1917) ने मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसमें इस बात पर बल दिया गया कि व्यवहार पर अचेतन मन का प्रभाव पड़ता है। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि अनसुलझे संघर्ष, जो अक्सर बचपन के अनुभवों में निहित होते हैं, मनोवैज्ञानिक संकट के रूप में प्रकट होते हैं। उदाहरण के लिए, दबी हुई यादें आघात चिंता या अवसाद (depression) का कारण बन सकता है। इस ढांचे में चिकित्सा इसमें अचेतन सामग्री को चेतना में मुक्त संगति और स्वप्न विश्लेषण जैसी तकनीकों द्वारा लाना शामिल है। **आरोन बेक (1967)** ने संज्ञानात्मक–व्यवहार सिद्धांत विकसित किया, जो मानसिक स्वास्थ्य विकारों में कुअनुकूली(maladaptive) सोच पैटर्न की भूमिका पर केन्द्रित है। उन्होंने 'संज्ञानात्मक विकृतियों' की पहचान की गई – तर्कहीन विचार पैटर्न जो नकारात्मक भावनात्मक स्थितियों में योगदान दें। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति– अवसाद से ग्रस्त व्यक्ति– 'विपत्तिपूर्ण' सोच में लिप्त हो सकता है, यह अपेक्षा करते हुए कि हर स्थिति में सबसे खराब परिणाम होगा। सीबीटी रोगियों को पहचानने और इन विकृतियों को चुनौती देकर स्वस्थ सोच को और व्यवहार को बढ़ावा देने में सहायता करना है।

मानवतावादी सिद्धांत, कार्ल रॉजर्स (1951) और अब्राहम मास्लो द्वारा समर्थित (1943), व्यक्तिगत क्षमता और आत्म–साक्षात्कार पर जोर देता है। रॉजर्स ने 'बिना शर्त सकारात्मक सम्मान' की अवधारणा पेश कर यह सुझाव देते हुए कहा कि बिना किसी निर्णय के व्यक्तियों के व्यक्तिगत विकास को स्वीकार करना चाहिए। मास्लो की आवश्यकताओं के पदानुक्रम का मानना है कि पूर्ति बुनियादी जरूरतें स्वयं तक ले जाती हैं यह दृष्टिकोण मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को उत्पन्न होते हुए देखता है ऐसी परिस्थितियों से बचें जो व्यक्तिगत विकास और आत्म–अभिव्यक्ति में बाधा डालती हैं। **जॉर्ज एंगेल (1977)** ने बायोसाइकोसोशल मॉडल का प्रस्ताव रखा, जो जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों को एकीकृत करता है। मानसिक स्वास्थ्य को समझने में उदाहरण के लिए, अवसाद का परिणाम हो सकता है आनुवंशिक प्रवृत्ति (जैविक), नकारात्मक के संयोजन से विचार पैटर्न (मनोवैज्ञानिक), और जीवन तनाव (सामाजिक) मॉडल मानसिक स्वास्थ्य के प्रति समग्र दृष्टिकोण के महत्व को रेखांकित करता है स्वास्थ्य देखभाल, व्यक्ति के जीवन के सभी पहलुओं को संबोधित करती है।

संज्ञानात्मक चिकित्सा पर **आरोन बेक (1976)** के शोध ने इसका प्रदर्शन किया अवसाद के उपचार में प्रभावकारिता। नकारात्मक विचारों को

संबोधित करके पैटर्न, रोगियों में अवसादग्रस्तता में महत्वपूर्ण कमी देखी गई। उदाहरण के लिए, एक मरीज जो सोचता है कि 'मैं बेकार हूँ' संज्ञानात्मक माध्यम से इस विश्वास को चुनौती देना और संशोधित करना सीख सकता है। **हॉफमैन तथा अन्य (2012)** ने इसका मेटा–विश्लेषण किया। चिंता विकारों के लिए संज्ञानात्मक–व्यवहार थेरेपी (सी बी टी), विभिन्न स्थितियों में इसकी प्रभावशीलता की पुष्टि करती है उनके निष्कर्ष समर्थन करते हैं सी बी टी को प्रथम–पंक्ति उपचार के रूप में महत्व दिया गया है संज्ञानात्मक विकृतियों और परिहार व्यवहार को संबोधित करना। **कैस्पी तथा अन्य (2003)** ने अवसाद में आनुवंशिक प्रवृत्तियों और पर्यावरणीय कारकों के बीच बातचीत का पता लगाया, जीन–पर्यावरण इंटरैक्शन की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने पाया कि विशिष्ट आनुवंशिक संरचना वाले व्यक्ति तनावपूर्ण जीवन की घटनाओं के बाद अवसाद के प्रति अधिक संवेदनशील थे, यह सुझाव देते हुए कि जैविक और पर्यावरणीय दोनों कारक मानसिक स्वास्थ्य में योगदान करते हैं।

प्रौद्योगिकी और तंत्रिका विज्ञान में मानसिक स्वास्थ्य विकारों को समझने और उनका उपचार करने में प्रगति ने महत्वपूर्ण परिणाम दिए हैं। कार्यात्मक चुंबकीय अनुनाद इमेजिंग (एफ एम आर आई) अध्ययनों ने यह जानकारी प्रदान की है मानसिक विकार से जुड़े मस्तिष्क गतिविधि पैटर्न में अंतर्दृष्टि। **कोहेन तथा अन्य (2018)** ने मस्तिष्क गतिविधि का अध्ययन करने के लिए fMRI का उपयोग किया, जिससे पता चला भावनात्मक विनियमन और तनाव प्रतिक्रिया में शामिल क्षेत्र निष्कर्षों का लक्षित उपचारों के विकास पर प्रभाव पड़ेगा। डिजिटल मोबाइल ऐप और टेलीथेरेपी जैसी स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियों ने मानसिक स्वास्थ्य देखभाल में क्रांतिकारी बदलाव लाकर इसे और अधिक सुलभ बना दिया।

निष्कर्ष रूप में, मानसिक विकास को बढ़ावा देने में मनोविज्ञान स्वास्थ्य और कल्याण के लिए साक्ष्य–आधारित रूपरेखा प्रस्तुत करके मानव व्यवहार, भावनाओं और अनुभूति को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मनोवैज्ञानिक सिद्धांत और चिकित्सीय दृष्टिकोण, जैसे संज्ञानात्मक–व्यवहार चिकित्सा, माइंडफुलनेस–आधारित हस्तक्षेप और सकारात्मक मनोविज्ञान ने मानसिक स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

दिमाग (mind) को आकार (shape) देना, चरित्र निर्माण करनाः दयालबाग शैक्षणिक संस्थान का सर्वांगीण दृष्टिकोण है

अनुभूति ठाकुर
बी.एस.सी इलेक्ट्रॉनिक्स, एम.सी.एम, धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, बैच 2012–13, डी.ई.आई.: वर्तमान में, ट्रांसियम कंसल्टिंग में प्रबंध भागीदार

शिक्षा व्यक्ति के व्यक्तित्व और समाज को आकार देने में परिवर्तनकारी भूमिका निभाती है, और दयालबाग़ शैक्षणिक संस्थान सीखने के लिए अपने अग्रणी दृष्टिकोण के माध्यम से इसका उदाहरण है। परंपरा और आधुनिकता का संगम, DEI ने विकसित किया है विशिष्ट शैक्षिक मॉडल जो छात्रों को न केवल अकादमिक सफलता के लिए बल्कि उनके सार्थक योगदान के लिए भी जो समुदायों और बड़े पैमाने पर दुनिया पर है।

डी.ई.आई. का शैक्षिक दर्शन सर्वांगीण विकास पर केंद्रित है एक समग्र दृष्टिकोण के माध्यम से व्यक्तियों को सहजता से एकीकृत किया जाता है व्यावहारिक, नैतिक और आध्यात्मिक आयामों के साथ शैक्षणिक कठोरता, समग्र व्यक्तित्व निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो सक्षम हो लगातार बदलती दुनिया की चुनौतियों का समाधान करने वाला यह अनूठा कार्यक्रम मॉडल व्यावसायिक और शैक्षणिक उत्कृष्टता दोनों पर जोर देता है, पारंपरिक शिक्षा के साथ–साथ व्यावहारिक, कार्य–आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना एवं प्रारंभिक अवस्था से ही आत्मनिर्भरता और कौशल विकास पर जोर देना है।

अपने मूल में, DEI रचनात्मक सोच, विश्लेषणात्मक सोच को विकसित करने का प्रयास करता है जैसे तर्क, और प्रयोग के प्रति प्रतिबद्धता, छात्रों को सक्षम बनाती है, जटिल समस्याओं से निपटने के लिए आवश्यक वैज्ञानिक स्वभाव के साथ गतिशील दुनिया में चुनौतियों का सामना करना। आचरण के उच्च मानकों पर आधारित और नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों में एक मजबूत आधार, संस्थान का लक्ष्य ऐसे व्यक्तियों का विकास करना जो उच्च आदर्शों की आकांक्षा रखते हों और अपने समाज के लिए व विश्व के लिए सार्थक योगदान देते हों।

डी.ई.आई. का एक परिभाषित मिशन मैनुअल छात्रों में रचनात्मकता और नवीन कार्य को प्रोत्साहित करते हुए श्रम की गरिमा को स्थापित करना है। संस्थान आलोचनात्मक क्षमता विकसित करने पर विशेष जोर देता है जैसे तर्क, विश्लेषण और सीखने की आजीवन आदत, छात्रों को उनकी मानवीय क्षमता की पूर्णता प्राप्त करने में सक्षम बनाना। यह वैज्ञानिक मानसिकता और व्यावहारिक समझ को भी बढ़ावा देता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी, द्वारा छात्रों को सहज रूप से अनुकूलन के लिए तैयार करना व तेजी से विकसित हो रहे तकनीकी परिदृश्य में प्रगति करना।

डी.ई.आई. की शिक्षाशास्त्र का एक अंतर्निहित लेकिन महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सामाजिक ताकतों को सराहना और सामाजिक व्यवस्था की

गहरी समझ पैदा करना। यह व्यापक दृष्टिकोण छात्रों को मजबूत बनाता है। उच्च नैतिक मानक, और गहन समझ जिम्मेदारी, उन्हें परिवर्तनशील समाज को दिशा देने और उसे आकार देने में सक्षम बनाना।

निष्ठा और उद्देश्य के साथ डी.ई.आई. छात्रों की पीढ़ियों को अर्थ, गुण, और इसके माध्यम से समाज के लिए प्रभावशाली सेवा समग्र विकास के प्रति अटूट प्रतिबद्धता जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

अनुशासन का महत्वः मेरे अल्मा मेटर से सीखें

तोरण तलवार

पी एच.डीः बी.ए. (मनोविज्ञान) बैच 1996–1999, एम.एस.सी. (मनोविज्ञान) बैच 1999–2001, डी.ई.आई., वर्तमान में, सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान, शारदा विश्वविद्यालय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट के पूर्व छात्र के रूप में, मैं अक्सर उन पाठों पर विचार करती हूं जो मुझे यहां सीखने का सौभाग्य मिला। सबसे प्रभावशाली में से हैं नियमितता और समय की पाबंदी – ऐसे गुण जिनका मैंने शुरू में विरोध किया था लेकिन अब गहराई से महत्व देती हूं। उस समय, उपस्थिति और समयबद्धता के सख्त नियम बोझ महसूस होते थे। सुबह जल्दी उठना और लगातार उपस्थिति बनाए रखने का दबाव अनावश्यक लग रहा था। फिर भी, वे आदतें जीवन के प्रति अनुशासित दृष्टिकोण की बुनियाद बन गईं।

स्नातक होने के बाद मुझे इन मूल्यों का वास्तविक महत्व समझ में आया। नियमितता ने मुझे स्थिरता की शक्ति सिखाई, और समय की पाबंदी ने व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों स्थितियों में विश्वास और सम्मान का निर्माण करने में मेरी मदद की। ये सबक, हालांकि सरल थे, इन्होंने मेरे चरित्र को आकार दिया और मुझे चुनौतियों का सामना करने में एक बढ़त दी।

सक्रिय भागीदारी पर जोर सिर्फ उपस्थित रहने तक ही सीमित नहीं था। कक्षाओं में प्रतिबद्धता और जवाबदेही के बारे में बताया गया। ये मूल्य जीवन कौशल कक्षा से कहीं आगे तक फैल गए, जिससे मुझे जीवन के सभी क्षेत्रों में संगठित और जिम्मेदार बने रहने में मदद मिली।

पीछे मुड़कर देखती हूँ तो मैं विश्वविद्यालय के अनुशासन के प्रति आभारी हूँ। मुझमें जो नियम डाले गए हैं जो नियम पहले कठोर लगते थे, वे वास्तव में अमूल्य सबक जिन्होंने मुझे जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार किया है। वर्तमान छात्रों से मेरा कहना है जो आदतें आप बना रहे हैं उन्हें अपनाएँ आज–व कल आपका अच्छा साथ देंगे।

मेरे अल्मा मेटर ने सिर्फ मुझे शिक्षित नहीं किया; इसने मुझे वह व्यक्ति बनाया जो मैं हूँ, तथा ऐसे मूल्यों का संचार किया जो आज भी मुझे हर दिन मार्गदर्शन करने के लिए जारी हैं।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादकीय बोर्ड

डी.ई.आई

संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन
मुख्य संपादक: प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय बोर्ड: डॉ. सोना दीक्षित, डॉ. सोनल सिंह, डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी, डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य: डॉ. चारु स्वामी, डॉ. नेहा जैन, डॉ. सौम्या सिन्हा, श्री आर.आर. सिंह, प्रो. प्रवीण सक्सेना, प्रो. वी. स्वामी दास, डॉ. रोहित राजवंशी, डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान
अनुवादक: डॉ. नमस्या, डॉ. निशिथ गौड़

डी.ई.आई.–ओ.डी.ई. (डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा)

संरक्षक: प्रो. सी. पटवर्धन, प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार: प्रो. एस.के. चौहान, प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल: डॉ. सोनल सिंह, डॉ. मीना पायदा, डॉ. लौलीन मल्होत्रा, डॉ. बानी दयाल धीर, श्री राकेश मेहता

अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. Alumni (AADEIs & AAFDEI)

संपादक: प्रो. गुर प्यारी जंडियाल

संपादकीय समिति: डॉ. सरन कुमार सतसंगी, प्रो. साहब दास, डॉ. बानी दयाल धीर, श्रीमती शिफाली सत्संगी, श्रीमती अरुणा शर्मा, डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. गुरप्यारी भटनागर, डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक: डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा, डॉ. नमस्या

प्रशासनिक कार्यालयः पहली मंजिल, 63, नेहरू नगर, आगरा –282002

पंजीकृत कार्यालयः 108, साउथ एक्स प्लाजा –1, साउथ एक्सटेंशन पार्ट II, नई दिल्ली–110049

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस